Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue2, Feb 2026, pp. 65-71 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.14
Available online at: https://vijact.com/

शैक्षिक अवसरों में असमानता: देवघर, झारखंड के युवाओं की शिक्षा पर गरीबी और सामाजिक संरचना का प्रभाव

सुनील कुमार नरौने [1] एवं डॉ. कुलदीप [2]

[1] शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग साई नाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड

Article Info

Article history:

Received Feb 19, 2026

Accepted Feb 27, 2026

Published Feb 28, 2026

Keywords:

युवा शिक्षा

गरीबी

सामाजिक संरचना

देवघर

झारखंड

जाति

लाइकर्ट स्केल

शैक्षणिक असमानता

ABSTRACT

यह शोध पत्र झारखंड के सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े जिले देवघर में युवाओं की शैक्षणिक संभावनाओं और आकांक्षाओं पर गरीबी एवं सामाजिक संरचना के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह उजागर करता है कि गहरी आर्थिक तंगी और जातिगत भेदभाव किस प्रकार 15 से 24 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की शिक्षा यात्रा में गंभीर बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। सर्वेक्षण-आधारित शोध पद्धति के अंतर्गत 300 युवा उत्तरदाताओं से 5-बिंदु वाली लाइकर्ट स्केल के माध्यम से तैयार किए गए प्रश्नावली द्वारा डेटा एकत्र किया गया। सर्वेक्षण में यह मापा गया कि आर्थिक अभाव, सामाजिक बहिष्करण और सामुदायिक स्तर पर शैक्षणिक समर्थन की उपलब्धता को लेकर युवाओं की क्या धारणा है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सीमित पारिवारिक आय के कारण अधिकांश छात्र प्रारंभिक अवस्था में स्कूल छोड़ देते हैं, जिनमें अकादमिक प्रेरणा की कमी और उच्च शिक्षा तक पहुंच बाधित होती है। इसके अतिरिक्त, जातिगत सामाजिक पदानुक्रम वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को और अधिक हाशिये पर धकेल देता है, जिससे उनकी शिक्षा प्रणाली में प्रगति की संभावनाएं कम हो जाती हैं। कई उत्तरदाताओं ने यह भी बताया कि पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर शिक्षा के प्रति प्रोत्साहन की कमी है, विशेषकर उन समुदायों में जहां शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है। लैंगिक असमानता भी उभरकर सामने आई, जिसमें लड़कियों को गरीबी और पितृसत्तात्मक सोच के कारण अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि सरकार द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देने के कई प्रयास किए गए हैं, परंतु वे ग्रामीण क्षेत्रों जैसे देवघर में समान रूप से प्रभावी नहीं हो पाए हैं। यह अध्ययन समावेशी नीतिगत सुधारों, बेहतर वित्तीय सहायता और समुदाय स्तर पर जागरूकता अभियानों की तत्काल आवश्यकता पर बल देता है। यह आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्तियों, जातिगत भेदभाव के विरुद्ध जागरूकता अभियान और ग्रामीण स्कूलों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने जैसे लक्षित उपायों की सिफारिश करता है। शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि देवघर में प्रणालीगत शैक्षणिक बाधाओं को दूर करने के लिए एक बहुआयामी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण आवश्यक है।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
सुनील कुमार नरौने
Email: sunilnarone565@gmail.com

1. परिचय

झारखंड, जो भारत के पूर्वी भाग में स्थित है, खनिज संसाधनों, सांस्कृतिक विविधता और महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी के लिए जाना जाता है। इन विशेषताओं के बावजूद, यह राज्य अभी भी व्यापक गरीबी, निम्न साक्षरता दर और सामाजिक असमानताओं से जूझ रहा है, जो विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में लोगों के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। राज्य में शिक्षा की स्थिति एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है, जो न केवल अपर्याप्त है, बल्कि विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच इसकी उपलब्धता भी असमान बनी हुई है। झारखंड में आर्थिक अभाव, बुनियादी ढांचे की कमी और जाति एवं लिंग आधारित गहरी सामाजिक संरचनाएं ऐसी प्रणालीगत समस्याएं हैं जो शिक्षा तक पहुंच और शैक्षिक परिणामों को सीमित करती हैं।

इसी संदर्भ में देवघर जिला अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह जिला भले ही धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैकृक्योंकि यहाँ प्रसिद्ध बैद्यनाथ धाम स्थित है परंतु इसके आर्थिक और शैक्षिक संकेतकों में गहरी विषमताएँ देखी जाती हैं। जिले की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ बुनियादी सेवाएँ और अवसरों की भारी कमी है। गरीबी व्यापक रूप से फैली हुई है और अधिकांश परिवार जीविका के लिए आत्मनिर्भर खेती या असंगठित मजदूरी पर निर्भर रहते हैं, जिससे बच्चों की शिक्षा में निवेश की संभावनाएँ बहुत कम रह जाती हैं। इसके अलावा, पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँकृविशेष रूप से जातिगत भेदभाव और कठोर लिंग भूमिकाएँकृशैक्षिक परिदृश्य को और जटिल बना देती हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग से आने वाले बच्चों को स्कूलों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जबकि लड़कियों को प्रायः घरेलू कार्यभार संभालना पड़ता है या कम उम्र में विवाह कर दिया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है।

यह शोध पत्र इन परस्पर जुड़े कारकोंकृआर्थिक तंगी और गहरे सामाजिक ढाँचोंकृके माध्यम से देवघर के 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं की शैक्षिक आकांक्षाओं, पहुंच और उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन गरीबी, जाति और लिंग के अंतर्संबंधों की पड़ताल करके यह समझने का प्रयास करता है कि वे किस प्रकार युवाओं के शैक्षिक अनुभवों को आकार देते हैं। सर्वेक्षण आधारित शोध पद्धति के माध्यम से यह अध्ययन देवघर के युवाओं की वास्तविक जीवन स्थितियों को उजागर करता है और समावेशी व समान शिक्षा की दिशा में प्रभावशाली सुधार की रणनीतियाँ प्रस्तावित करता है।

2. साहित्य समीक्षा

विकेली, एफ., बुलॉक, के., मुशैम्प, वाई., और रिज, टी. (2009)

यह शोध पत्र इस धारणा की पड़ताल करता है कि गरीबी में जीवन यापन करने वाले बच्चों की सीखने की क्षमता उनके सामाजिक नेटवर्क और शैक्षणिक संबंधों की गुणवत्ता तथा विस्तार से प्रभावित होती है। यह अध्ययन स्कूल के बाहर होने वाली गतिविधियों में बच्चों और वयस्कों के बीच शैक्षणिक संबंधों की गुणवत्ता और स्थिरता की जांच करता है। शोध का सिद्धांत यह है कि जिन बच्चों के पास औपचारिक और अनौपचारिक रूप से अधिक सफल शैक्षणिक संबंध होते हैं, उनके सतत् अधिगम और भविष्य में रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करने की संभावना अधिक होती है। अध्ययन यह जांचता है कि बच्चे शैक्षणिक संबंधों को कैसे विकसित और बनाए रखते हैं तथा औपचारिक शैक्षणिक संदर्भों में वे अपनी सक्रिय भूमिका को किस प्रकार से निभा पाते हैं और किन सीमाओं का सामना करते हैं। यह स्कूल के बाहर के शैक्षणिक संबंधों की पड़ताल करता है और गरीबी में जी रहे बच्चों की शैक्षणिक स्थितियों की तुलना समृद्ध बच्चों से करता है। इस प्रक्रिया में, यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शैक्षणिक संबंध बच्चों की सीखने में भागीदारी को कैसे प्रभावित करते हैं, अनुभवों में कौन-कौन सी कमी महसूस की जाती है और बच्चे स्वयं किन कारणों को इसके लिए जिम्मेदार मानते हैं। दूसरों के साथ मिलकर काम करना, संबंध बनाना और दूसरों की विशेषज्ञता का लाभ लेनाकृये सभी कौशल जीवन में सफलता के लिए आवश्यक हैं और यही कौशल नियोक्ताओं द्वारा सबसे

अधिक मांगे जाते हैं। यह शोध गरीबी में रहने वाले बच्चों के सीखने को सहयोग देने वाले संबंधों की समझ को बेहतर बनाता है और उन बाधाओं को उजागर करता है जो उन्हें विद्यालय में आगे बढ़ने से रोकती हैं।

फर्ग्यूसन, एच.बी., बोवार्ड, एस., और म्यूएलर, एम.पी. (2007)

पिछले एक दशक में, कनाडा में पारिवारिक आय में असमानता बढ़ी है। शिक्षा संबंधी उपलब्धियाँ पारिवारिक आय से सीधे प्रभावित होती हैं। कम आय वाले परिवारों के बच्चे अक्सर स्कूल की शुरुआत में ही अपने समृद्ध साथियों की तुलना में पिछड़े होते हैं, जैसा कि ष्स्कूल रेडीनेसष् (विद्यालय प्रवेश की तैयारी) के मापदंडों से स्पष्ट होता है। गरीबी की आवृत्ति, उसकी तीव्रता, अवधि और समय निर्धारण जैसे कारक बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं, साथ ही साथ समुदाय की विशेषताएँ और सामाजिक नेटवर्क भी इसमें भूमिका निभाते हैं। हालांकि, कनाडा और अन्य देशों में कई स्थायी हस्तक्षेपों ने यह दर्शाया है कि गरीबी के प्रभावों को कम किया जा सकता है। बाल रोग विशेषज्ञों और पारिवारिक चिकित्सकों के पास प्राथमिक चिकित्सा सेवा के माध्यम से बच्चों की स्कूल तैयारी और शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करने के कई अवसर उपलब्ध होते हैं।

मैकहेल, के.ए., डिसबाटो, डी.जे., और काशदान, टी.बी. (2016)

किशोरावस्था में गरीबी का संबंध असामाजिक व्यवहारों में वृद्धि और सामाजिक हित में किए गए कार्यों में कमी से देखा गया है। इन नकारात्मक प्रभावों को कम करना व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही दृष्टियों से आवश्यक है। अब तक का अधिकतर शोध जोखिम कारकों पर केंद्रित रहा है, जिससे यह समझने की कोशिश की गई है कि गरीब किशोर असामाजिक व्यवहारों से कैसे बच सकते हैं। यह अध्ययन एक श्सशक्तिकरण परिप्रेक्ष्यश् को अपनाते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार 'जीवन में उद्देश्य' नामक संभावित पुनःस्थापनात्मक कारक, गरीबी के दुष्प्रभावों से बच्चों की रक्षा कर सकता है। शोध में जीवन में उद्देश्य को एक केंद्रीय, भविष्य-केंद्रित लक्ष्य-आधारित ढाँचे के रूप में परिभाषित किया गया है जो किशोरों को असामाजिक व्यवहारों से दूर रहने और सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। विश्लेषण में यह पाया गया कि जीवन का उद्देश्य गरीबी से उत्पन्न असामाजिक व्यवहारों (जैसे अवज्ञा, धमकाना) को कम करने में सहायक रहा, लेकिन यह सामाजिक हित वाले व्यवहारों को बढ़ावा देने में विशेष प्रभावी नहीं रहा। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि गरीब किशोरों में जीवन के उद्देश्य की भावना को विकसित करना उनकी और उनके समुदाय की भलाई के लिए अत्यंत आवश्यक है।

3. उद्देश्य

1. देवघर के युवाओं में शिक्षा की पहुंच और निरंतरता पर गरीबी के प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. जाति, समुदाय और लिंग जैसी सामाजिक संरचनाओं के युवाओं की शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. युवाओं की दृष्टि से उनकी शैक्षणिक प्रगति में मौजूद प्रणालीगत बाधाओं की पहचान करना।

4. शोध की कार्यप्रणाली

यह अध्ययन एक वर्णनात्मक सर्वेक्षणात्मक शोध डिजाइन को अपनाता है, जिसका उद्देश्य युवाओं द्वारा शिक्षा तक पहुँच में आने वाली सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के प्रति उनके प्रत्यक्ष अनुभव और दृष्टिकोण को समझना है। यह कार्यप्रणाली मात्रात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिससे शोध के लिए एक विविध प्रतिभागी समूह से संरचित उत्तरों को एकत्रित और विश्लेषित करना संभव हुआ।

नमूना चयन

झारखंड के देवघर जिले के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से 15 से 24 वर्ष की आयु के कुल 300 प्रतिभागियों का चयन किया गया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि नमूना क्षेत्र की सामाजिक विविधता को प्रतिबिंबित करे, स्तरीकृत याद्दच्छिक नमूना तकनीक (Stratified Random Sampling) का उपयोग किया गया। इस विधि से जाति, आय स्तर और लिंग जैसे प्रमुख सामाजिक वर्गों में संतुलित प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ, जिससे अध्ययन की निष्पक्षता और समावेशिता में वृद्धि हुई।

डेटा संग्रह विधि

डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें तीन मुख्य प्रश्न शामिल थे जिन्हें 5-बिंदु लाइकेर्ट स्केल के अनुसार डिजाइन किया गया था। प्रतिभागियों से प्रत्येक कथन पर अपनी सहमति की सीमा को 1 (पूर्णतः असहमत) से 5 (पूर्णतः सहमत) तक अंकित करने के लिए कहा गया।

ये प्रश्न विशेष रूप से निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित थे:

- आर्थिक कठिनाइयों का प्रभाव
- जाति आधारित असमानता
- सामाजिक सहयोग प्रणालियों की भूमिका

लाइकेर्ट स्केल के उपयोग से उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण की तीव्रता को समझना संभव हुआ और क्षेत्र में युवाओं की शिक्षा पर सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव का मात्रात्मक मूल्यांकन किया जा सका।

5. डेटा विश्लेषण

तालिका 1: मेरे परिवार में वित्तीय समस्याओं के कारण, मुझे अपनी शिक्षा से समझौता करना पड़ा या उसे छोड़ना पड़ा।

कथन	संख्या	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	84	28.0
सहमत	102	34.0
तटस्थ	54	18.0
असहमत	36	12.0
पूर्णतः असहमत	24	8.0
कुल	**300**	**100.0**

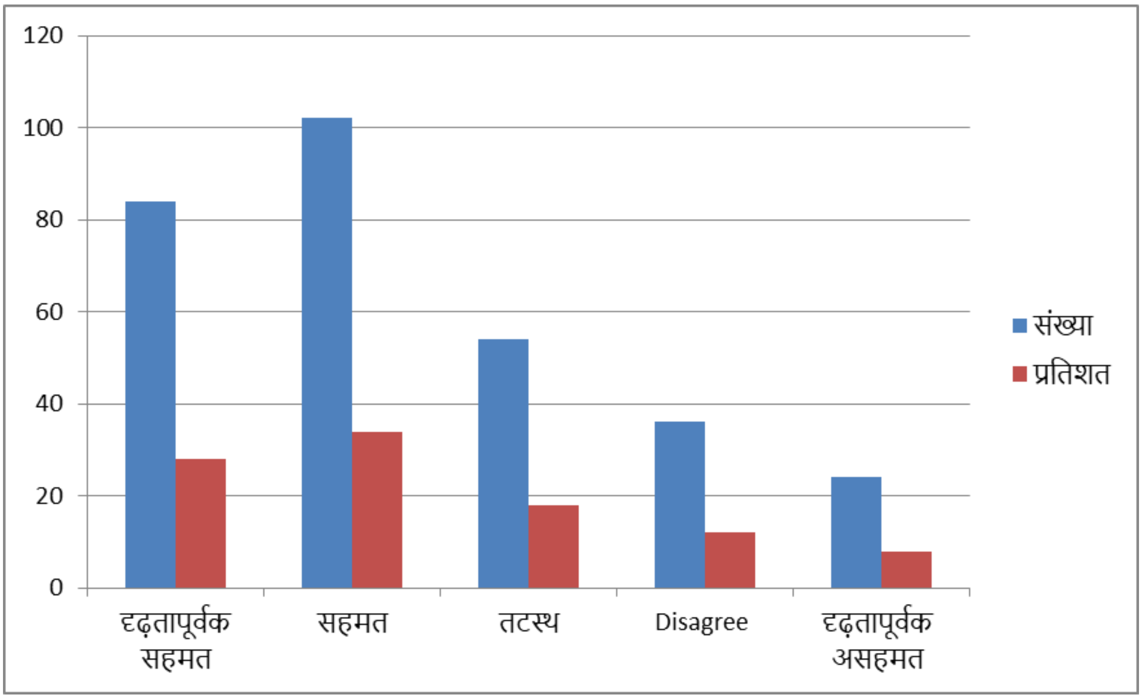

चित्र 1: मेरे परिवार में वित्तीय समस्याओं के कारण, मुझे अपनी शिक्षा से समझौता करना पड़ा या उसे बीच में ही छोड़ना पड़ा।

तालिका 2 मेरी जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि स्कूल या शैक्षणिक संस्थानों में मेरे साथ किए जाने वाले व्यवहार को प्रभावित करती है।

कथन	संख्या	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	90	30.0
सहमत	105	35.0
तटस्थ	45	15.0
असहमत	36	12.0
पूर्णतः असहमत	24	8.0
कुल	**300**	**100.0**

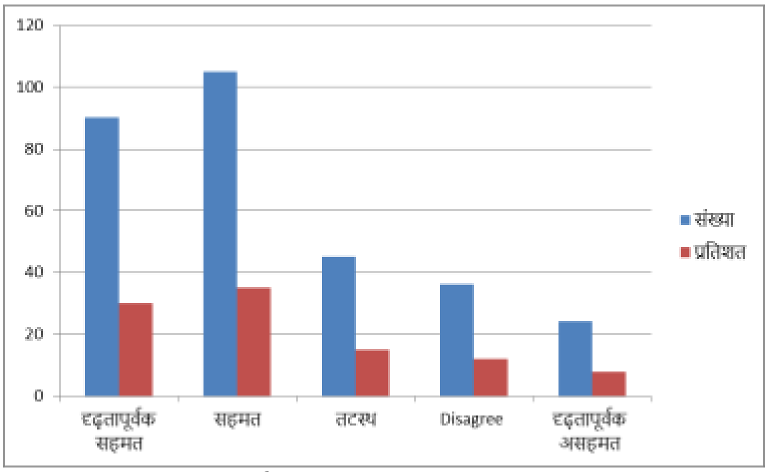

चित्र 2: मेरी जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि स्कूल या शैक्षणिक संस्थानों में मेरे साथ किए जाने वाले व्यवहार को प्रभावित करती है।

तालिका 3 मेरे समुदाय में सामाजिक अपेक्षाएँ और पारंपरिक भूमिकाएँ मेरी शैक्षिक आकांक्षाओं को सीमित करती हैं।

कथन	संख्या	प्रतिशत
पूर्णतः सहमत	88	29.3
सहमत	97	32.3
तटस्थ	50	16.7
असहमत	40	13.3
पूर्णतः असहमत	25	8.4
कुल	**300**	**100.0**

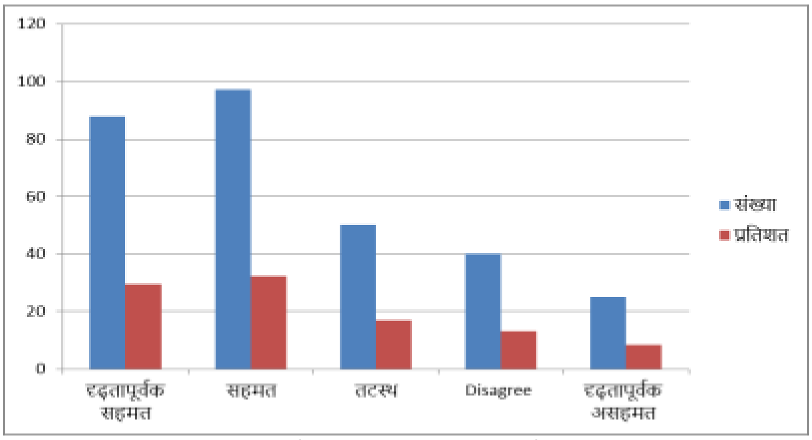

चित्र 3: मेरे समुदाय में सामाजिक अपेक्षाएँ और पारंपरिक भूमिकाएँ मेरी शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रतिबंधित करती हैं।

तीनों तालिकाओं से प्राप्त आँकड़े देवघर के युवाओं द्वारा शिक्षा प्राप्त करने और उसे जारी रखने में आने वाली सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाओं पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

तालिका 1 से पता चलता है कि एक बड़ी संख्या—28% पूर्णतः सहमत और 34% सहमत (कुल 62%)—प्रतिभागियों ने बताया कि परिवार की आर्थिक समस्याओं के कारण उन्हें अपनी शिक्षा से समझौता करना पड़ा या उसे बीच में ही छोड़ना पड़ा। यह स्पष्ट करता है कि आर्थिक कठिनाई युवाओं की सतत शैक्षिक सहभागिता में एक प्रमुख बाधा है। केवल 12% असहमत और 8% पूर्णतः असहमत प्रतिभागियों ने इसके विपरीत राय व्यक्त की, जिससे यह सिद्ध होता है कि आर्थिक संकट क्षेत्र में व्यापक रूप से फैला हुआ है।

तालिका 2 में जाति और सामाजिक पृष्ठभूमि की भूमिका को रेखांकित किया गया है। कुल 65% प्रतिभागियों (30% पूर्णतः सहमत और 35% सहमत) ने महसूस किया कि उनकी जाति या सामाजिक पहचान उनके साथ शैक्षणिक संस्थानों में किए जाने वाले व्यवहार को प्रभावित करती है। यह इस बात को दर्शाता है कि जातिगत भेदभाव और पक्षपात आज भी शैक्षणिक वातावरण में विद्यमान हैं। केवल 20% प्रतिभागियों ने असहमति या पूर्ण असहमति व्यक्त की, जो यह संकेत करता है कि अधिकांश युवाओं के लिए सामाजिक पृष्ठभूमि अभी भी उनके आत्मविश्वास और शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

तालिका 3 पारंपरिक भूमिकाओं और सामुदायिक अपेक्षाओं के शैक्षिक आकांक्षाओं पर प्रभाव को दर्शाती है। यहाँ भी, 29.3% पूर्णतः सहमत और 32.3% सहमत (कुल 61.6%) प्रतिभागियों ने माना कि समाज की अपेक्षाएँ और पारंपरिक मान्यताएँ उनकी शिक्षा को स्वतंत्र रूप से प्राप्त करने या उच्च लक्ष्य रखने की क्षमता को सीमित करती हैं। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रासंगिक है, जहाँ लैंगिक भूमिकाएँ और सामुदायिक जिम्मेदारियाँ औपचारिक शिक्षा से अधिक महत्व रखती हैं, विशेषकर बालिकाओं के लिए।

कुल मिलाकर, इन तालिकाओं की व्याख्या यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि गरीबी, जातिगत भेदभाव और रूढ़िवादी सामाजिक अपेक्षाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई बाधाएँ हैं, जो देवघर के युवाओं की शैक्षिक उपलब्धियों और आकांक्षाओं को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए समेकित नीतिगत हस्तक्षेप, सामुदायिक जागरूकता और वंचित एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विशेष समर्थन तंत्र की आवश्यकता है।

6. निष्कर्ष

देवघर में शिक्षा केवल अधोसंरचना, विद्यालयों की उपलब्धता या सरकारी योजनाओं पर निर्भर नहीं है; यह क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई है। इस अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि गरीबी एक मूलभूत बाधा बन गई है, जो न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच को सीमित करती है, बल्कि युवाओं की आकांक्षाओं और भविष्य की संभावनाओं को भी प्रभावित करती है। जिन परिवारों को आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ता है, वे प्रायः दीर्घकालिक शैक्षिक निवेश की तुलना में तात्कालिक आय-सृजन गतिविधियों को प्राथमिकता देते हैं, जिसके कारण स्कूल छोड़ने की दर अधिक होती है और उच्च शिक्षा में नामांकन न्यूनतम रहता है। इसके अतिरिक्त, सीमित आर्थिक संसाधनों के चलते छात्रों को अध्ययन सामग्री, निजी ट्यूशन या घर पर अनुकूल शैक्षिक वातावरण उपलब्ध नहीं हो पाता, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

आर्थिक सीमाओं के अलावा, जाति और लिंग आधारित गहरी सामाजिक संरचनाएँ भी प्रणालीगत बहिष्करण को बनाए रखती हैं। वंचित समुदायों—विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग—से आने वाले छात्र अक्सर शैक्षणिक संस्थानों में भेदभाव और कम अपेक्षाओं का सामना करते हैं। साथ ही, लैंगिक पूर्वाग्रहों के कारण लड़कियों की शिक्षा में भागीदारी सीमित रहती है, क्योंकि पारंपरिक भूमिकाएँ और कम उम्र में विवाह ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी आम हैं। ये सामाजिक संरचनाएँ अलग-अलग न होकर गरीबी के साथ मिलकर शैक्षिक वंचना और सामाजिक गतिहीनता के चक्र को और अधिक मजबूत करती हैं।

अतः, देवघर में शैक्षिक असमानता को दूर करने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। नीतिगत हस्तक्षेपों को केवल भौतिक अधोसंरचना के सुधार तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें उन सामाजिक और आर्थिक बाधाओं को समाप्त करने पर भी केंद्रित होना चाहिए, जो सीखने की समान पहुँच में बाधा बनती हैं। इसमें लक्षित वित्तीय सहायता प्रदान करना, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना तथा सभी समुदायों में शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना शामिल है। केवल ऐसे व्यापक और सतत प्रयासों के माध्यम से ही देवघर के युवाओं को वंचना के चक्र को तोड़ने और अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास की पूर्ण संभावनाओं को साकार करने में सक्षम बनाया जा सकता है।

References

[1]. ड्रेज़, जे., एवं खेड़ा, आर. (2017). भारत में हाल की सामाजिक सुरक्षा पहल। *विश्व विकास, 98*, 555–572।

[2]. शाह, एम., मंदर, एच., थोराट, एस., देशपांडे, एस., एवं बाविस्कर, ए. (2006). *ग्रामीण भारत में अस्पृश्यता* (पृ. 102–147)। सेज प्रकाशन।

[3]. बसोले, ए., एवं जयदेव, ए. (2019). ग्रामीण भारत में रोजगार पैटर्न। *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 54*(42), 23–29।

[4]. नायर, पी.आर.जी. (2014). ग्रामीण रोजगार में कौशल विकास की भूमिका। *कुरुक्षेत्र, 62*(7), 23–27।

[5]. खेड़ा, आर. (2011). महिला श्रमिक और नरेगा के बारे में धारणाएँ। *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 46*(43), 49–57।

[6]. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन। (2020)। *ग्रामीण परिवर्तन के लिए कौशल: कार्रवाई का आह्वान*। ILO प्रकाशन।

[7]. सिंह, आर. (2020)। ग्रामीण रोजगार योजनाओं का मूल्यांकन: एक तुलनात्मक विश्लेषण। *जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट स्टडीज, 12*(3), 45–58।

[8]. जाधव, एम., एवं सेन, एस. (2013)। रोजगार गारंटी और पलायन। *जर्नल ऑफ डेवलपमेंट पॉलिसी एंड प्रैक्टिस, 1*(1), 37–48।

[9]. शाह, जी., मंदर, एच., थोराट, एस., देशपांडे, एस., एवं बाविस्कर, ए. (2006)। *ग्रामीण भारत में अस्पृश्यता* (पृ. 45–78)। SAGE प्रकाशन।

[10]. मेहता, ए. (2018)। ग्रामीण भारत में शैक्षिक अभाव: संरचनात्मक अंतर्दृष्टि। *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 79*(2), 179–195।

[11]. ड्रेज़, जे., एवं खेड़ा, आर. (2017)। भारत में हाल की सामाजिक सुरक्षा पहल। *विश्व विकास, 98*, 555–572।

[12]. बसोले, ए., एवं जयदेव, ए. (2019)। ग्रामीण भारत में रोजगार पैटर्न। *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 54*(42), 23–29।

[13]. शिक्षा मंत्रालय। (2022)। *झारखंड में शिक्षा की स्थिति रिपोर्ट* (पृ. 15–29)। भारत सरकार, नई दिल्ली।

[14]. नायर, पी.आर.जी. (2014)। शिक्षा में सामाजिक समानता की भूमिका। *कुरुक्षेत्र, 62*(7), 23–27।

[15]. खेतक? (मूल पाठ में लेखक का नाम अस्पष्ट है)। (2011)। महिला कर्मचारी और सार्वजनिक सेवाओं की धारणाएँ। *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 46*(43), 49–57।

[16]. तिलक, जे.-बी.-जी. (2002)। शिक्षा और गरीबी। *जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, 3*(2), 191–207।

Cite this Article:

सुनील कुमार नरौने एवं डॉ. कुलदीप, "शैक्षिक अवसरों में असमानता: देवघर, झारखंड के युवाओं की शिक्षा पर गरीबी और सामाजिक संरचना का प्रभाव", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 2, pp. 65-71, February 2026.*

Journal URL: https://vijact.com

***DOI:** https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.14*